॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

नारायण सूक्त

विषय-सूची

नारायणसूक्तशुक्ल यजुर्वेद – 3
विष्णुसूक्त शुक्ल यजुर्वेद – 6
विष्णुसूक्त ऋग्वेद – 10

नारायणसूक्त– शुक्ल यजुर्वेद

शुक्ल यजुर्वेद

नारायण सूक्त में केवल छः मन्त्र हैं। इनकी विशेषता यह है कि नारायण सूक्त के मन्त्रों के ज्ञाता के वश में सभी देवता हो जाते हैं। इस सूक्त के ऋषि नारायण, देवता आदित्य-पुरुष और छन्द भूरिगार्षी त्रिष्टुप्, निच्यूदार्षी त्रिष्टुप् एवं आर्य्यनुष्टुप् है।

क्योंकि शुक्लयजुर्वेद में पुरुषसूक्त के सोलह मन्त्रों के अनन्तर नारायण सूक्त के छः मन्त्र भी प्राप्त होते हैं। अतः इस सूक्त को उत्तर नारायणसूक्त भी कहा जाता है।

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे॥१॥

पृथ्वी आदि की सृष्टि के लिये अपने प्रेम के कारण वह पुरुष जल आदि से परिपूर्ण होकर पूर्व ही छा गया। उस पुरुष के रूप को धारण करता हुआ सूर्य उदित होता है, जिसका मनुष्य के लिये प्रधान देवत्व है। ॥१॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥२॥

मैं अज्ञान अन्धकार से परे आदित्य-प्रतीकात्मक उस सर्वोत्कृष्ट पुरुष को जानता हूँ। मात्र उसे जानकर ही मृत्यु का अतिक्रमण होता है। शरण के लिये अन्य कोई मार्ग नहीं है। ॥२॥

प्रजापतिश्चरति गर्ने अन्तरजायमानो बहुधा वि जायते।
तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥३॥

वह परमात्मा आभ्यन्त रमें विराजमान हैं। उत्पन्न न होने वाला होकर भी नाना प्रकार से उत्पन्न होता हैं। संयमी पुरुष ही उसके स्वरूप का साक्षात्कार करते हैं। सम्पूर्ण भूत उसी में सन्निविष्ट हैं। ॥३॥

यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥४॥

जो देवताओं के लिये सूर्यरूप से प्रकाशित होता है, जो देवताओं का कार्यसाधन करनेवाला है और जो देवताओं से पूर्व स्वयं भूत हैं, उस देदीप्यमान ब्रह्म को नमस्कार है। ॥४॥

रुचं ब्राह्म जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्।
यस्त्वैवं ब्राह्मण विद्यात्तस्य देवा असन् वशे॥५॥

उस शोभन ब्रह्मको प्रथम प्रकट करते हुए देवता बोले-जो ब्राह्मण तुम्हें इस स्वरूपमें जाने, देवता उसके वश में हों। ॥५॥

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।

इष्णन्निषाणामुंम इषाण सर्वलोकं में इषाण॥६॥

समृद्धि और सौन्दर्य तुम्हारी पत्नीके रूपमें हैं, दिन तथा रात तुम्हारे अगल-बगल हैं, अनन्त नक्षत्र तुम्हारे रूप हैं, द्यावा-पृथिवी तुम्हारे मुखस्थानीय हैं। इच्छा करते समय परलोककी इच्छा करो। मैं सर्वलोकात्मक हो जाऊँ-ऐसी इच्छा करो, ऐसी इच्छा करो। ॥६॥

विष्णुसूक्त – शुक्ल यजुर्वेद

शुक्ल यजुर्वेद ५। १५-२१

इस सूक्त के द्रष्टा दीर्घतमा ऋषि हैं। विष्णु के विविध रूप, कर्म हैं। अद्वितीय परमेश्वररूप में उन्हें 'महाविष्णु' कहा जाता हैं। यज्ञ एवं जलोत्पादक सूर्य भी उन्हीं का रूप है। वे पुरातन हैं, जगत्स्रष्टा हैं। उनके नाम एवं लीला के संकीर्तन से परमपद की प्राप्ति होती हैं, जो मनुष्य-जीवन का चरम लक्ष्य है। जो व्यक्ति उनकी ओर उन्मुख होता है, उसकी ओर से भी उन्मुख होते हैं और मनोवांछित फल प्रदानकर अनुगृहीत करते हैं।

इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् ।
समूढमस्य पा सुरे स्वाहा॥१॥

सर्वव्यापी परमात्मा विष्णु ने इस जगत को धारण किया है और वे ही पहले भूमि, दूसरे अन्तरिक्ष और तीसरे द्युलोक में तीन पदों को स्थापित करते हैं। इन विष्णु देवमें ही समस्त विश्व व्याप्त है। हम उनके निमित्त हवि प्रदान करते हैं ॥१॥

इरावती धेनुमती हि भूतसूयवसिनी मनवे दशस्या।
व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा
॥२॥

यह पृथ्वी सबके कल्याणार्थ अन्न और गाय से खाद्य-पदार्थ देने वाली तथा हित के साधनों को देनेवाली है। हे विष्णुदेव! आपने इस पृथ्वी को अपनी किरणों द्वारा सब ओर अच्छी प्रकार से धारण कर रखा है। हम आपके लिये आहुति प्रदान करते हैं। ॥२॥

देवश्रुतौ देवेष्वा घोषतं प्राची प्रेतमध्वरं कल्पयन्ती ऊर्ध्वं यज्ञं नयतं मा जिह्वरतम्।
स्वं गोष्ठमा वदतं देवी दुर्ये आयुर्मा निर्वादिष्टं प्रजां मा निर्वादिष्टमत्र रमेथां वर्मन् पृथिव्याः ॥३॥

आप देवसभा में प्रसिद्ध विद्वानों में यह कहें। इस यज्ञ के समर्थन में पूर्व दिशा में जाकर यज्ञ को उच्च बनायें, अधःपतित न करें। देवस्थान में रहनेवाले अपनी गौशाला में निवास करें। जब तक आयु है तब तक धनादिसे सम्पन्न बनायें। संततियों पर अनुग्रह करें। इस सुखप्रद स्थान में आप सदैव निवास करें ॥३॥

विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजाꣳसि।
यो अस्कभायदुत्तर सधस्थं विचक्रमाण स्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा ॥४॥

जिन सर्वव्यापी परमात्मा विष्णु ने अपने सामर्थ्य से इस पृथ्वी सहित अन्तरिक्ष, द्युलोक आदि स्थानों का निर्माण किया है तथा जो तीनों लोकों में अपने पराक्रम से प्रशंसित होकर उच्चतम

स्थान को शोभायमान करते हैं, उन सर्वव्यापी परमात्माके यशों का कहाँ तक वर्णन करें ॥ ४ ॥

दिवो वा विष्ण उत वा पृथिव्या महो वा विष्ण उरोरन्तरिक्षात्।
उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्र यच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विष्णवे त्वा ॥५॥

हे विष्णु ! आप अपनी कृपा, करुणा से समस्त जगत को सुखों से पूर्ण कीजिये और भूमि से उत्पन्न पदार्थ और अन्तरिक्ष से प्राप्त द्रव्यों से सभी सुख निश्चय ही प्रदान कीजिये। हे सर्वान्तर्यामी प्रभु ! दोनों हाथों से समस्त सुखों को प्रदान करनेवाले विष्णु ! हम आपको सुपूजित करते हैं। ॥५॥

प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो ने भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्व धिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥६॥

भयंकर सिंह के समान पर्वतों में विचरण करनेवाले सर्वव्यापी देव विष्णु ! आप अतुलित पराक्रम के कारण स्तुति-योग्य हैं। सर्वव्यापक विष्णुदेव के तीनों स्थानों में सम्पूर्ण प्राणी निवास करते हैं ॥६॥

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोधुवोऽसि।
वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥७॥

इस विश्व में व्यापक देव विष्णु का प्रकाश निरन्तर फैल रहा है। विष्णु के द्वारा ही यह विश्व स्थिर है तथा इनसे ही इस जगत्का विस्तार हुआ है और कण-कणमें ये ही प्रभु व्याप्त हैं। जगत्की उत्पत्ति करनेवाले हे प्रभु ! हम आपकी अर्चना करते हैं ॥६॥

विष्णुसूक्त – ऋग्वेद

[ऋग्वेद ७ । १००]

ऋग्वेद अंतर्गत वर्णित विष्णु सूक्त में भगवान् विष्णु से धन-सम्पत्ति एवं निर्मल बुद्धि आदि की याचना की गयी है। भगवान के वामनावतार की लीला का स्पष्ट वर्णन इस सूक्तमें प्राप्त होता है। इस सूक्त के ऋषि मैत्रावरुणि वसिष्ठ, छन्द त्रिष्टुप् एवं देवता विष्णु हैं।

नू मत दयते सनिष्यन् यो विष्णव उरुगायाय दाशत्।
प्र यः सत्राचा मनसा यजात एतावन्तं नर्यमाविवासात् ॥१॥

धन की इच्छा करता हुआ वही मनुष्य शीघ्र धन को पाता है, जो सभी के कीर्तनीय भगवान् विष्णु को हव्य प्रदान करता है और जो सामग्री से मन्त्रपूर्वक प्रकृष्ट पूजा करता है तथा इतने बड़े मनुष्योंके हितैषी की नमस्कारादि से परिचर्या करता है ॥१॥

त्वं विष्णो सुमतिं विश्वजन्यामप्रयुतामेवयावो मतिं दाः।
पर्चा यथा नः सुवितस्य भूरेरश्वावतः पुरुश्चन्द्रस्य रायः ॥२॥

हे स्तोताओं के मनोरथ पूर्ण करनेवाले विष्णु! आप हमें सर्वजन हितैषिणी और दोषरहित बुद्धि प्रदान करें, जिससे अच्छी प्रकार

प्राप्त करने योग्य, प्रचुर अश्वों से युक्त, बहुत से आह्लाद प्रदायक धन के साथ हमारा सम्पर्क हो ॥२॥

त्रिर्देवः पृथिवीमेष एतां वि चक्रमे शतर्चसं महित्वा।
प्र विष्णुरस्तु तवसस्तवीयान् त्वेषं ह्यस्य स्थविरस्य नाम ॥३॥

इस दानादि गुणों से युक्त भगवान् विष्णु ने सैकड़ों किरणों वाली पृथिवी को अपने महान् तीनों पगों से आक्रान्त कर दिया था। वे ही पुरातन विष्णु हमारे स्वामी हों। अत्यन्त पुरातन होने से ही यह विष्णुनाम या रूप दीप्त है ॥३॥

वि चक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्रीय विष्णुर्मनुषे दशस्यन्।
ध्रुवासो अस्य कीरयो जनास उरुक्षितिं सुजनिमा चकार॥४॥

इन देव विष्णु ने पृथिव्यादि तीनों लोकों को असुरों से लेकर स्तुति करते हुए देवगण को निवासार्थ देने के लिये ही तीन पदों से आच्छादित कर दिया था। इन भगवान् विष्णु के स्तोताजन निश्चल होते हैं। सुन्दर जन्मों वाले इन भगवान् विष्णु ने अपने स्तोताओं के लिये विस्तीर्ण निवासस्थल बनाया था ॥४॥

प्रतत् ते अद्य शिपिविष्ट नामाऽर्यः शंसामि वयुनानि विद्वान्।
तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान् क्षयन्तमस्य रजसः पराके ॥५॥

हे किरणोंसे भरे हुए विष्णो! हे आर्य ! आज ज्ञातव्य अन्य विषयों को जानते हुए आपके उस प्रवृद्ध विष्णुनाम की, अत्यन्त अवृद्ध हमलोग स्तुति करेंगे, क्योंकि आप इस रजोगुणी लोक से दूर देश में निवास करते हैं। ॥५॥

किमित् ते विष्णो परिचयं भूत् प्र यद् ववक्षे शिपिविष्टो अस्मि।
मा वर्षो अस्मदप गूह एतद् यदन्यरूपः समिथे बभूथ ॥६॥

हे विष्णो ! यह जो 'मैं शिपिविष्ट हूँ'-ऐसा आप कहते हैं, वह आपका शिपिविष्टरूप को छिपाना क्या उचित है ? हमारे लिये अपना रूप मत छिपाइये। यह तो आपका दूसरा ही रूप है, जो युद्धके समय धारण किया था। ॥६॥

वषट्ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

हे विष्णो! मैं आपके लिये मुख से वषट्कार करता हूँ। हे शिपिविष्ट! मेरे उस हव्य को स्वीकार कीजिये। मेरी की हुई सुन्दर स्तुतियों से आपकी वृद्धि हो और आप सदा हमारा स्वस्ति द्वारा पालन करें ॥७॥

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।